ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 14 अंकः 157 हिन्दी–अंग्रेजी मासिक ई–पत्रिका जून 2021

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें – 07533006009

स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका का विमोचन

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की मासिक पत्रिका स्पिरिचुअल साइंस, के प्रथम संस्करण (जून 2008) का विमोचन समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के करकमलों द्वारा 29 मई 2008 को किया गया। जून 2021 में यह पत्रिका अपने 14 वें वर्ष में पदार्पण कर चुकी है।गुरुदेव इसे हमेशा 'अखबार' कहा करते थे।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 157 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जून 2021

अनुक्रम

खोजो तो पाओ। 4

कहानी - चोरी की चोरी 6

ध्यान 8

भारत का स्वर्ण युग 9

संजीवनी मंत्र 11

साधना विषयक बातें 12

साधकों के अनुभव 17

चेतना 23

सिद्ध-योगियों की महिमा 27

रूपान्तरण (Transformation) 31

भारत के उत्थान में योग शक्ति का अद्भुत प्रभाव....35

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 40

योग के आधार 41

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 43

ध्यान की विधि 46

❖ संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖ सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

खोजो तो पाओ।

बहुत साल पहले की बात है, अपने एक मित्र से गुरुदेव के बारे में सुना और उसी पल उनसे दीक्षा लेने का निर्णय भी ले लिया। अगले ही दिन, बृहस्पतिवार होने से दीक्षा भी मिल गई। उसके बाद साधना शुरू कर दी और गुरुदेव के प्रवचन भी सुनना शुरू किया। एक बार मन में विचार आया कि गुरुदेव के ज्यादातर प्रवचन एक समान है इसलिए अब ज्ञात है कि गुरुदेव प्रवचनों में क्या कहते हैं। ऐसा सोचकर फिर गुरुदेव के प्रवचनों को ध्यान से कभी नहीं सुना, सुना भी तो आधा-अधूरा। धीरे-धीरे समय निकलता गया।

पिछले कुछ महीनों से ऐसा महसूस हुआ कि किसी भी परेशानी या उलझन में फंसा होने पर कभी सुबह उठते ही, कभी ध्यान में या कभी शांत बैठा होने पर, दिमाग में, गुरुदेव के प्रवचनों में बोला गया कोई एक वाक्य घूम जाता और समस्या का हल मिल जाता। यह बहुत ही अद्भुत था। बहुत बार ऐसा होने पर यह बात मन में यकायक कौंधी कि गुरुदेव के प्रवचन तो अनमोल खजाना हैं, जादुई पिटारा हैं।

प्रवचनों को सुनना एक बात होती है और उसको आत्मसात करना दूसरी। तब से गुरुदेव के प्रवचनों को बार-बार सुनना शुरू किया। जितना अधिक सुना उसके अन्दर का मर्म अधिक समझ में आने लगा। अब गुरुदेव के प्रवचनों के सुवाक्य ही पथ प्रदर्शक बन गए हैं, जो रास्ता दिखाते हैं और भटकने से बचाते भी हैं। अब बाहर से किसी भी व्यक्ति की, व्यक्ति के चैनल की, वाट्सएप ग्रुप की जरूरत महसूस नहीं होती। गुरुदेव के कहे अनुसार तो बाहर कुछ है ही

www.the-comforter.org

नहीं, जो भी है वो अपने अन्दर है।

आप सभी साधकों से करबद्ध निवेदन है कि गुरुदेव के प्रवचनों को अधिक से अधिक सुनें। ये सुनने में भले ही ऐसे लगें कि ये पहले भी सुने हुए हैं, कि वही बात बोली गई है जो पिछले प्रवचन में सुनी थी, पर इसका मर्म आप तभी समझ पाएँगें जब आप इसे खुद एक बार आजमा कर देखेंगे। ये उसी तरह है जैसे हम बचपन में 'खजाने की खोज' खेल खेलते थे। हर बार प्रवचन सुनने पर एक अनोखा खजाना मिलता है, एक नई बात समझ में आती है, एक नए सिरे से आँखें खुल जाती हैं। अद्भुत हैं हमारे गुरुदेव के प्रवचन, बहुत अद्भुत।

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।

जो बावरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ।।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

कहानी

चोरी की चोरी

कांचीपुरी में वज्र नामक एक चोर था। किसी की सम्पति चुराने पर उसके स्वामी को जो कष्ट होता है, उसे सहृदय व्यक्ति ही आँक सकता है। चोर का हृदय वस्तुतः वज्र का बना होता है। इसीलिये वह चोरी कर पाता है। यदि चोर को परदुख कातरता का अहसास हो तो वह चोरी करना ही छोड़ दे। वज्र ऐसा ही कठोर हृदयवाला चोर था। चुराये हुए धन को वह राज-रक्षकों द्वारा पकड़े जाने के भय से आधी रात के समय जंगल में जाकर मिट्टी खोदकर गाड़ देता था।

एक रात वीरदत्त नामक एक लकड़हारे ने चोर को धन गाड़ते हुए देख लिया। चोर के चले जाने के बाद अब वह प्रतिदिन मिट्टी हटाकर सम्पत्ति में से दसवाँ हिस्सा निकाल लेता और गड्ढे को पहले की तरह पत्थर-मिट्टी से ढक देता था। लकड़हारा चालाक चोर था। वह इस ढंग से चुराता था कि वज्र उसकी चोरी को कभी भाँप न सका।

एक दिन लकड़हारा अपनी पत्नी को धन देता हुआ बोला-'तुम प्रतिदिन धन माँगा करती थीं, लो, आज मुझे पर्याप्त धन प्राप्त हो गया है।' पत्नी ने कहा- 'जो धन अपने परिश्रम से उपार्जित किया जाता है, वही स्थायी होता है, दूसरा धन नष्ट हो जाता है। इसलिये इस धन से जनता के भले के लिये बावड़ी, कुआँ आदि बनवाना चाहिये।' उसके पति को भी यह बात जँच गयी। इसलिये उसने गाँव में एक बहुत बड़ा तालाब खुदवाया। गर्मी में भी उसका जल नहीं सूखता था।

www.the-comforter.org

इस प्रकार लकड़हारा बहुत समय तक वज्र के दशांश चुराकर जनहित के कार्य करता रहा। कुछ समय पश्चात उसकी मृत्यु हो गई।तब उसे लेने के लिये एक ओर यम के दूत और दूसरी ओर भगवान् विष्णु के दूत आये।उनमें परस्पर विवाद होने लगा। इसी बीच नारदजी वहाँ पधारे।उन्होंने सबको समझाया कि 'आप लोग कलह न करें, मेरी बात सुनें।इस लकड़हारे ने चोरी के धन से सार्वजनिक हित में कार्य किए हैं। अतः जब तक कुमार्ग से उपार्जित द्रव्यरूप पाप का प्रायश्चित्त नहीं हो जाता, तब तक यह अपने कुकर्मों का फल भोगेगा।'नारदजी की बात सुनकर सभी दूत सन्तुष्ट हो गये।

इस प्रकार बारह वर्षों तक वह लकड़हारा अपने कुकर्मों का कष्ट भोगता रहा।

देवर्षि नारदजी ने लकड़हारे की पत्नी से कहा-'तुमने अपने पति को उत्तम मार्ग दिखाया है, इसलिये तुम ब्रह्मलोक जाओ।'

इस प्रकार लकड़हारे ने जीवन में अच्छे कार्य करने पर भी मृत्योपरान्त बारह वर्षों तक चोरी जैसे दुष्कर्म करने के कारण नरक के समान कष्ट भोगे। वहीं लकड़हारे की पत्नी ने एक उत्कृष्ट महिला के समान पति के चोरी से लाए हुए धन के प्रति आकर्षित ना होकर अपने पति को उस धन को जनहित में लगाने की उत्तम सलाह दी, जिसके कारण उसे ब्रह्मलोक की प्राप्ति हुई। इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि हम जीवन में चाहे जितने भी जप-तप कर लें परन्तु यदि हम दैनिक जीवन में गलत कार्य कर रहे हैं तो उन बुरे कर्मों का फल हमें भोगना ही पड़ेगा।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

ध्यान

"तू सर्वव्यापी आत्मा है, इसी बात का मनन और ध्यान किया कर। मैं देह नहीं- मन नहीं-बुद्धि नहीं-स्थूल नहीं-सूक्ष्म नहीं- इस प्रकार 'नेति नेति' करके प्रत्येक चैतन्य रूपी अपने स्वरूप में मन को डुबो दे। इस प्रकार मन को बार बार डुबो डुबो कर मार डाल। तभी ज्ञानस्वरूप का बोध या स्व स्वरूप में स्थिति होगी। उस समय ध्याता- ध्येय- ध्यान एक बन जायेंगे- ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान एक हो जायेंगे। सभी अध्यासों की निवृत्ति हो जायेगी। इसी को शास्त्र में 'त्रिपुटि भेद' कहा है। इस स्थिति में जानने, न जानने का प्रश्न ही नहीं रह जाता। आत्मा ही जब एकमात्र विज्ञाता है, तब उसे फिर जानेगा कैसे? आत्मा ही ज्ञान-आत्मा ही चैतन्य- आत्मा ही सच्चिदानन्द है।"(६/१६६)

-स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

यदि ध्यान की असीम गहराई और गहनता को समझना है तो प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?
सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के संजीवनी मंत्र के जप के साथ,
इनके चित्र पर 15 मिनट ध्यान करके देखें!

भारत का स्वर्ण युग

भारत के स्वर्णयुग के बारे में श्री अरविन्द के विचार–''भगवान् की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, यूरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय–ही–विजय होगी। तुम्हें दूसरे देशों और राष्ट्रों की तरह प्रगति करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें उनकी तरह दूसरों को दबाने और कुचलने की जरूरत नहीं। तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से आ रहा है, उसे सारे संसार को देना है।''

आजादी प्राप्त करने के बाद श्री अरविन्द ने कहा था ''हम केवल सरकार का रूप बदलने के लिए तैयारी

www.the-comforter.org

नहीं कर रहे हैं, हम एक राष्ट्र को गढ़ना चाहते हैं। राजनीति तो इसका एक छोटा सा भाग है। हम केवल राजनीति, सामाजिक संगठन, धार्मिक वाद-विवाद, दर्शन साहित्य या विज्ञान तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखना चाहते।हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है "धर्म" और ये सब चीजें और इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ हमारे धर्म की परिभाषा में आते हैं। जीवन के कुछ महान् नियम है, मानव-विकास का एक सिद्धांत है और अध्यात्म-विद्या का एक भंडार है।

ये सब तत्त्व हमारे "सनातन धर्म" के अन्दर आ जाते हैं। इसकी रक्षा करना, इसका प्रसार करना और इसका मूर्तिमन्त उदाहरण बनना भारत का कर्तव्य है।विदेशी प्रभाव के कारण भारत अपने धर्म को खो बैठा है। सनातन धर्म "सिद्धांतों का, धार्मिक परिपाटियों का, एक समूह नहीं हैं।

जब तक उसे जीवन में न उतारा जाय, हमारे दैनिक जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज के अन्दर-चाहे वह राजनीति हो या वाणिज्य, साहित्य हो या विज्ञान, वैयक्तिक आचरण हो या राष्ट्रीय कूटनीति - मूर्तरुप से न लाया जाय,तब तक उसकी सफलता नहीं होगी।

"भारत, जीवन के सामने 'योग' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।" योग के द्वारा सच्ची-स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करने की बात हमें तब तक समझ में नहीं आ सकती, जब तक हम क्रियात्मक ढंग से उसका वास्तविक आनन्द ले नहीं लेते।

भारतीय योगदर्शन उस परमतत्त्व से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने का 'क्रियात्मक पथ' बताता है। उस परमसत्ता में ही मात्र ज्ञान और विज्ञान की पराकाष्ठा है। अभी उसके पास असीम ज्ञान और विज्ञान विश्व में प्रकट करने को पड़ा है।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

संजीवनी मंत्र

"जब एक महान् जनसमुदाय धूल में से उठ खड़ा होता है तो कौन-सा मंत्र संजीवनी मंत्र है, अथवा उसे पुनर्जीवित करनेवाली कौनसी शक्ति है? भारत में दो महामंत्र हैं-एक तो 'वंदे मातरम्' का मंत्र है जो मातृभूमि के प्रति जनता के जाग्रत प्रेम की सार्वभौम पुकार है और दूसरा और अधिक गुप्त और रहस्यपूर्ण है, जो अभी उद्घाटित नहीं हुआ है।"

"हमने 'वंदे मातरम्' मंत्र का प्रयोग अपने सारे हृदय और आत्मा से किया, और जब तक हमने उसका उपयोग किया और उसे जिया, सभी कठिनाईयों को पार करने के लिए उसकी शक्ति पर निर्भर रहे, हम उन्नति करते गये। पर अचानक हमारे विश्वास और साहस ने हमें धोखा दे दिया, मंत्र की पुकार डूबने लगी और जैसे-जैसे उसकी गूँज कमजोर पड़ने लगी, शक्ति देश से तिरोहित होने लगी। ईश्वर ने ही उसे मंद किया और डगमगा दिया क्योंकि वह अपना काम कर चुका था। 'वंदे मातरम्' से और अधिक महान् मंत्र आने को है। बंकिमचन्द्र चटर्जी भारतीय जागृति के अंतिम दृष्टा नहीं थे। उन्होंने केवल प्राथमिक और सार्वजनिक पूजा को शब्द दिये न कि आंतरिक गुप्त उपासना का सूत्र और अनुष्ठान। क्योंकि सबसे महान् वे मंत्र हैं जो भीतर ही उच्चरित किये जाते हैं और जिन्हें द्रष्टा अपने शिष्यों को स्वप्न अथवा संकल्पना में धीरे से कान में सुनाता है। जब उस अंतिम मंत्र का अभ्यास दो या तीन व्यक्ति भी करेंगे तो ईश्वर का हाथ खुलना प्रारंभ होगा; जब उपासना का अनुसरण बहुत लोग करेंगे तो बंद हाथ बिल्कुल खुल जाएगा।"

-श्री अरविन्द, 19 फरवरी 1908
'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक से

(अब वह संजीवनी मंत्र उद्घाटित हो गया है-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा में सामूहिक रूप से दिया जाने वाला दिव्य मंत्र ही संजीवनी मंत्र है।)

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

www.the-comforter.org

यही Attitude (मनोभाव) अच्छा है। जब भी कठिनाइयाँ आती हैं, चेतना पर पर्दा पड़ जाता है। तब विचलित न होकर शांत भाव से शक्ति को पुकारना चाहिये जब तक कि परदा सरक न जाये। पर्दा पड़ता जरूर है पर सब कुछ अंतराल में रहता है।

शक्ति ने स्वेच्छा से चोट नहीं पहुँचायी। पर हाँ, यदि भीतर कोई कामना या अहंकार रहे तो वे उठ खड़े होते हैं और शक्ति से उसकी स्वीकृति या पोषण न पाने के कारण आहत महसूस करते हैं और साधक मान बैठते हैं कि शक्ति हमें चोट पहुँचा रही है। कभी शक्ति यदि चोट करें भी तो अहंकार और कामना को चोट पहुँचाती हैं, तुम्हें नहीं। अहंकार और कामना को वर्जित कर संपूर्ण

आत्मसमर्पण करने से प्रकृति के सब दोष क्रमशः तिरोहित हो जाते हैं एवं शक्ति का चिर सानिध्य उपलब्ध हो सकता है।

www.the-comforter.org

शारीरिक चेतना में नीचे उतर आना तो सभी साधकों में होता है-नीचे नहीं उतरने से उस चेतना का रूपांतर होना कठिन है।

प्रश्नः- मैं प्रायः हर समय तुम्हारे प्रकाश और चेतना को अपने अंदर उतार लाने की कोशिश करती हूँ पर मेरे अंदर वैसा कुछ नहीं हो रहा, मैं क्या करूं?

उत्तरः- धीरज रख चेष्टा करते रहने से अंततः नतीजा निकलना आरंभ होता है। शरीर-चेतना खुलती है, थोड़ा-थोड़ा कर परिवर्तन आरंभ होता है।

इससे विचलित मत होओ। योग-पथ में ऐसी अवस्था आती ही है-जब निम्नतम शरीर-चेतना में और अवचेतना में उतर आने का समय आता है तो वह सब अनेक दिन टिक जाते हैं। किंतु इस पर्दे के पीछे शक्ति हैं, बाद में दिखायी देंगी, यह निम्न राज्य ऊर्ध्व आलोक के राज्य में

परिणत होगा, ऐसा दृढ़ विश्वास रखकर सब समर्पण करते-करते इस बाधापूर्ण स्थिति का अंत आ जाने तक आगे बढ़ती चलो।

शक्ति तुमसे दूर नही चली गयी है, साथ ही है-बाह्य चेतना के परदे के कारण अनुभव नहीं कर पा रही हो-यह विश्वास रखकर चलना होता है कि शक्ति मेरे साथ है, मेरे अंदर ही है। ये कठिनाइयाँ तो कुछ भी नहीं, मनुष्य-मात्र में ये कठिनाइयाँ रहती हैं, 'उपयुक्त' तो कोई भी नहीं। अच्छे-बुरे को गिनते रहना व्यर्थ है। शक्ति पर विश्वास और अटूट aspiration (अभीप्सा) रखना ही सार है। इससे सारी बाधाओं को अतिक्रम किया जा सकता है।

जितना भी नीचे, अतल गहराई में जाओ, शक्ति वहाँ तुम्हारे साथ है।

शक्ति और भगवान् के बिना तुम नगण्य हो-शक्ति तो तुम्हारे साथ ही है। साधक पाताल में उतरते हैं वहाँ ऊर्ध्व के प्रकाश और चेतना को उतार लाने के लिये-ऐसा विश्वास रख धीर चित्त से चलो; वह प्रकाश, वह चेतना उतरेगी ही उतरेगी।

अंतिम पत्र में जो लिखा है सब सच है-इसी तरह सतत् सचेत रहो। बाहरी स्पर्श या मिथ्यात्व की शक्ति के suggestion (सुझाव) से अब और विचलित या विमूढ़ नहीं होना चाहिये। अपने अंदर रहो जहां शक्ति है-बाहर तो बाहर है, बाहर को भीतर से सत्य की आँखों से देखना चाहिये, तभी साधक निरापद होता है। अज्ञान में डूबे रहने के कारण साधक खुद शक्ति के पास से दूर हो जाते हैं। शक्ति तो कभी दूर नहीं होती, चिरकाल के लिये अंदर, साथ ही है। भीतर रहने पर उन्हें खोने का प्रश्न ही नहीं उठता।

पुनश्च-रोग शायद इस आक्रमण का फल है। शांत रह, शक्ति की तरफ शरीर-चेतना को खोल दो, ठीक हो जायेगा।

प्रश्नः- आजकल प्रतिपल, हर श्वास-प्रश्वास में, हर सोच-विचार

www.the-comforter.org

और दृश्य में असंख्य छोटे-छोटे ओसकणों की तरह अनुभव करती हूँ कठिनाइयों को। प्रायः ही सिरदर्द रहता है, खासकर तब जब भीतर डूबी होती हूँ, यह असह्य हो उठता है। कभी-कभी छाती में भय की तरह कुछ कंपित होता है, मन-प्राण छटपटाते हैं, कभी तो कांटे की तरह कुछ गले में अटक-सा जाता है...।

www.the-comforter.org

उत्तरः- शरीर-चेतना तो ऐसी कठिनाइयों को उभारती ही है। इनकी उपेक्षा कर, दृढ़ हो शक्ति के पास जाने के लिये अटल संकल्प रखो तब बाधाएँ पथ पर रोड़े नहीं अटकायेंगी।

शक्ति की सहायता तो है ही। बाधा से निराश न हो, भीतर से नीरव हो अपने को खोल दो। जो सहायता पाओगी उसे ग्रहण कर सकोगी।

शक्ति का प्रेम और सहायता सदा ही है, उसका कभी भी अभाव नहीं होता।

प्रश्नः- अभी तक भी मैं क्यों नहीं शक्ति को काम करते समय याद रख सकती ?

उत्तरः- मन का स्वभाव है कि जो वह करता है उसमें मग्न रहता है। साधना के अभ्यास से मन की इस साधारण गति को अतिक्रम किया जा सकता है।

सारी सत्ता को detail (विस्तार) से खोलने और संपूर्णतः समर्पित होने में समय लगता है, खासकर lower vital और physical (नाभि के नीचे और पांव के तल तक) में ऊर्ध्व चेतना को उतारने में समय लगता है। तुम्हारा higher vital (उच्चतर प्राण) काफी खुला है, निम्न प्राण और शरीर-चेतना खुल रहे हैं-पर पूरी तरह नहीं खुले हैं इसीलिये बाधाएँ अब भी हैं, पर उनसे विचलित

नहीं होना चाहिये। तुम्हारे अंदर शक्ति का काम द्रुत गति से हो रहा है, सब हो जायेगा।

मैंने लिखा था कि किसी तरह की कामना या दावे को कोई प्रश्रय न दे शक्ति को ही चाहना चाहिये। कामना आदि आती हैं प्राणों की पुरानी आदत के कारण।

पर तुम यदि हामी न भरो और हर बार उसे झाड़ फेंको तो आदत का जोर कम पड़ जायेगा, अंततः कामना और दावा नहीं रह जायेंगे।

यह बहुत अच्छा है। जब अंदर परिवर्तन हुआ है तब बाहर भी धीरे-धीरे हो जायेगा। बहिस्सत्ता भीतर के प्रकाश का, शक्ति का यन्त्र बनेगी।

प्रश्नः- मैं पूरे आधार में तुम्हारी शक्ति और काम को अनुभव कर रही हूँ। बोध हो रहा है कि पीछे की तरफ अर्थात् पीठ के मध्य कुछ खुल रहा है और वहाँ तुम्हारी शक्ति और ज्योति को देखती हूँ और अनुभव करती हूँ।

उत्तरः- अति उत्तम। पीछे की सत्ता प्रायः अचेतन ही रहती है और उसके द्वारा बाधाएँ सहज ही घुस आती हैं। इस तरह पीछे के भाग का खुलना और सचेतन होना खूब अच्छा फल लाता है।

नींद न आना, शरीर का दुर्बल होना किसी भी तरह ठीक नहीं। नींद न आने से शरीर कमजोर होगा ही। नींद में भी साधना की स्थिति रह सकती है। यानी शक्ति की गोद में सोना, किंतु नींद तो आनी ही चाहिये।

कभी अच्छी अवस्था, कभी कंटकाकीर्ण अवस्था तो सबकी होती है। यह तो साधना की परंपरा है। धीरता से काम लो। धीरे-धीरे अच्छी अवस्था बढ़ेगी, बाधाएं कम हो जायेंगी, अंत में खत्म हो जायेंगी।

अशान्ति और अचेतनता आने पर शांत हो, उनका प्रत्याख्यान कर शक्ति को समर्पित करो, तब ये नहीं टिक पायेंगी।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गुरुदेव की कृपा से बेटे को जीवन दान।

मैं, रविन्द्र कुमार राना, पंजाब से हूँ। गुरुदेव से शक्तिपात दीक्षा लेकर मंत्र जाप और ध्यान शुरू करने के कुछ महीनों बाद ही मेरे 22 वर्षीय बेटे का भयंकर एक्सीडेन्ट हुआ जिससे उसको और तकलीफों के साथ-साथ पैरालिसिस भी हो गया। मेडिकल चैकअप में एचआईवी भी बताया। बेटा आईसीयू में भर्ती था, ईलाज चल रहा था पर उसकी तबीयत में कोई सुधार नहीं था। बचने की संभावना न के बराबर थी। डॉक्टरों ने बोला कि यह बचेगा नहीं और बच भी गया तो लगभग 5 साल लगेंगे बिस्तर से उठने में।

काफी खर्चा हो रहा था। मेरे सामने कोई रास्ता नहीं था। सब पैसे भी खत्म हो चुके थे। मैं सब तरह से हिम्मत हार चुका था। फिर एक दिन गुरुदेव से करूण प्रार्थना की-'हे गुरुदेव अब आप ही मेरा सहारा हो, आप बेटे को बचा लो।

www.the-comforter.org

गुरुदेव के सामने प्रार्थना करने के बाद मुझे संबल मिला और मैंने डॉक्टरों को बोल दिया कि अब मैं इसको घर लेकर जाऊंगा। जो होगा देखा जाएगा। फिर मैं और मेरी पत्नी उसको एक चादर में डालकर घर ले आए।

जो दवाईयाँ थीं, वो देते रहे। मेरे मन में गुरु महाराज की कृपा से इतना यकीन आ गया था कि मैंने हॉस्पिटल में ही बोल दिया था कि

गुरुदेव की कृपा से मेरा बेटा बीस दिन में चलने लगेगा।

हम दोनों उसकी सेवा में जुटे रहे। घर पर गुरुदेव से खूब प्रार्थना की और मंत्र जप और ध्यान चलता रहा। बीस दिन में मेरा बेटा बिस्तर से उठ बैठा। हमारे खुशी का ठिकाना नहीं रहा। गुरुदेव ने वर्षों के दुःख और पीड़ा को, दिनों में बदल दिया। वास्तव में गुरुदेव की असीम कृपा बरसी। गुरुदेव का मिशन इनकी शक्ति से ही चल रहा है। मैं भी उनके मिशन का एक सिपाही हूँ। मेरे लिए गुरुदेव ने बहुत बड़ा चमत्कार किया है।

पंजाब में नशे की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा है। मेरा बेटा भी नशे का शिकार था। वो नशे की प्रवृत्ति से भी मुक्त हो गया। अब कोई 5-10 प्रतिशत असर रहा है, पैरालिसिस का, वो भी ठीक हो जाएगा।

मैं शुरू से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति का रहा हूँ। पूर्ण गुरु की प्राप्ति के लिए कई गुरुओं और संगठनों से जुड़ा। संन्यासियों के संघ में गया और सिर भी मुण्डवाया। लेकिन आत्म संतुष्टि कहीं नहीं मिली।

आखिर में मुझे पूर्ण गुरु हमारे गुरुमहाराज में मिले। पूज्य सद्गुरुदेव ने बेटे को बचाकर इतना बड़ा चमत्कार कर दिया है कि मेरे लिए अब इनसे बड़ा कोई नहीं है। जिस बेटे की हालत को देखकर अस्पताल के डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था, उसे मात्र बीस दिन में बिस्तर से खड़ा करके चलाने वाले गुरुदेव महाराज के चरणों में कोटि-कोटि नमन्।

नाम - रविन्द्र कुमार राना
पंजाब

www.the-comforter.org

पति को मिला जीवनदान

जिन्दगी में नहीं थी कोई पहचान
जब से मिले हो आप, मिली आन-बान और शान।।

मैं (रवीना सांगवान) केंद्रीय विद्यालय में अध्यापिका हूँ। मेरे पति आज सिविल सर्विस पास करके एक उच्च पद पर नियुक्त हैं। यह सब केवल गुरुदेव का आशीर्वाद है।

10 साल के पहले की जिन्दगी और अब की जिन्दगी में जमीन आसमान का अन्तर है। परंतु अनुभव साझा करते हुए मेरे आज भी रोंगटे खड़े हो रहे हैं। पहले मेरे पति वायु सेना में नियुक्त थे। किसी कारणवश उनका लीवर बिल्कुल खराब हो गया था। शरीर में 6 ग्राम खून रह गया था। आधी रोटी खाते थे। देखने वाले सब यही कहते कि पहलवान को क्या हो गया और इनका वजन भी बिल्कुल कम हो गया था। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए और क्या नहीं किया जाए। सब जगह से उपचार करवा लिया। मैंने भी कई बार यह सोच लिया कि मालूम नहीं भगवान इनको ठीक करेंगे या नहीं करेंगे। इनकी हालत इतनी खराब थी कि देखते ही आँखों में पानी आ जाता था।

एक दिन इनके दोस्त सत्यवान हमारे घर आए और बोले कि इनको क्या हो गया है, ये तो पहलवान थे? सत्यवान को शायद गुरुदेव ने ही भेजा था। उन्होंने कहा कि एक बार यह मंत्र जप कर और ध्यान करके देखो। हम ऐसे परिवार से नाता रखते थे कि इन बातों पर विश्वास नहीं था। लेकिन सत्यवान जी बार-बार आग्रह करने लगे कि एक बार बैठ कर देखो। शाम को उनके कहने पर मैं गुरुदेव को आजमाने बैठ गई क्योंकि मेरे पास कोई और चारा भी नहीं था। लेकिन गुरुदेव ने मेरी आजमाइश को ही खत्म कर दिया। मैंने कहा हो न हो यहाँ कुछ तो है। दूसरे दिन मैंने अपने पति को ध्यान करने के लिए कहा। उन्होंने कहा यौगिक क्रिया तो नहीं हुई

www.the-comforter.org

लेकिन मुँह बहुत मीठा हो गया जैसे किसी ने मठाई खिला दी हो। बस उस दिन से गुरुदेव मेरे पति को अमृत रूपी दवाई पिलाने लगे और मेरे पति धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे।

आज गुरुदेव की कृपा से वे पूर्णतः स्वस्थ हैं। गुरुदेव के आशीर्वाद से वह अपना काम बड़ी श्रद्धा, ईमानदारी और वफादारी से कर रहे हैं। हमें आज जीवन, धरती पर स्वर्ग लग रहा है। धन्य हो गए आज हम ऐसे गरुवर को पाकर, जिन्दगी संवार दी जिन्होंने जीवन में आकर। आजीवन अपना आशीर्वाद रखना।

प्रभु की प्रीत

प्रभु की प्रीत है बड़ी निराली,
दर पर जो आया कोई गया ना खाली।
प्रभु से बड़ा जग में कोई ना मीत
हो जाओ धन्य, सब पाकर प्रभु की प्रीत।
हल्दी, माला, कपूर का यहाँ कोई नहीं दिखावा
मन से प्रभु को याद करो, बाकी सब है भुलावा।
मंत्र जाप और ध्यान से करो प्रभु को शोभित
हो जाओ धन्य सब पाकर प्रभु की प्रीत।
सांसों पर है नहीं यकीन, कर लो प्रभु का भरोसा
अपना-पराया छोड़ कर करो नए युग की आशा
एकता के बल पर कर दो प्रभु को पुष्पित
हो जाओ धन्य सब पाकर प्रभु की प्रीत।
नर नारी, बच्चे, बूढ़े कर दो खड़ी मिसाल
मंत्र रूपी हथियार से कर दो सबको खुशहाल
सोए हुए संसार को कर दो तुम पल्लवित
हो जाओ धन्य, सब पाकर प्रभु की प्रीत।

नाम- रवीना सांगवान

www.the-comforter.org

जीवन में गुरुदेव की कृपा

मेरा नाम लक्ष्मण सिंह, मैं गांव रामपुरा, जिला अजमेर से हूँ।

मैं सन 2012 में गुरुदेव से जुड़ा हूँ। गुरुदेव से दीक्षा लेने के शुरुआती तौर पर मेरा ध्यान बहुत अच्छा लगता था, बहुत सारी यौगिक क्रियाएँ होती थीं। साधना कुल मिलाकर अच्छी चल रही थी, साधना के दौरान गुरुदेव ने कई सारे शारीरिक कष्टों से मुक्ति दिलाई। साधनारत रहते बहुत आनंद की अनुभूति होती रहती थी। वैसे तो जीवन में गुरुदेव से जुड़ने के बाद कई सारे चमत्कार देखे जो लिख पाना संभव नहीं है।

मैं आपको बताना चाहूंगा कि पिछले दिनों करीब 07 मई 2021 की बात है, मेरे पूरे शरीर में - हाथ, पांव, कंधों आदि में भयंकर दर्द होने लगा। ऐसा दर्द पहले कभी नहीं हुआ था। यह करीब 6-7 दिन तक होता रहा। इस दौरान मैंने कोई दवाई नहीं ली लेकिन कुछ ज्यादा ही दर्द होने के दौरान, मेरी पत्नी के कहने पर मैंने एक-दो बार शाम के समय पेरासिटामोल टेबलेट ले ली, लेकिन उसका भी कोई असर नहीं हुआ। कंधे और हाथ-पैरों में दर्द कम नहीं हुआ व साथ ही साथ मुंह का स्वाद भी चला गया।

इन सब परेशानियों के मद्देनजर, मैंने सघन संजीवनी मंत्र का जाप शुरू किया। जितना भी हो सका, संजीवनी मंत्र का जाप और

www.the-comforter.org

कभी-कभी गुरुदेव की स्पीच सुनता रहा और कोई भी दवाई नहीं ली। केवल नाम जप व ध्यान से 13 मई 2021 तक हाथ-पैर और कंधों में दर्द होना बंद हो गया। और 17 मई 2021 को मुंह का स्वाद वापस आ गया और अब बिल्कुल बिना किसी परेशानी के आनंदमय जीवन जी रहा हूँ।

मेरा आप सभी जन से करबद्ध निवेदन है कि आप सिद्ध योग अपनाएं और आनंदमय जीवन व्यतीत करें। गुरुदेव जी ने कहा है कि यह एक ऐसा विज्ञान है जो आज तक प्रकट नहीं हुआ। गुरुदेव आपको कोटि-कोटि नमन्।

नाम - लक्ष्मण सिंह,

गांव रामपुरा, जिला अजमेर

www.the-comforter.org

वर्षों पुरानी पेट की गाँठ से मुक्ति

मैं (गोकुल सिंह देवड़ा) देवास, मध्य प्रदेश का रहने वाला हूँ। मेरी माँ 95 वर्ष की हैं। उनके पेट में नाभी के ऊपर वर्षों पुरानी एक बड़ी गाँठ थी जो कि एक बड़ी समस्या थी क्योंकि इसका ऑपरेशन भी सम्भव नहीं था। लेकिन गुरुदेव के मंत्र जाप और सुबह-शाम ध्यान से गाँठ अपने आप ही खत्म हो गई। अब मेरी माँ बिल्कुल स्वस्थ हैं। उन्हें अभी भी यौगिक क्रियाएँ होती हैं। गुरुदेव के चरणों में कोटि-कोटि नमन्।

नाम - गोकुल सिंह देवड़ा

देवास, मध्य प्रदेश

चेतना

–श्री अरविन्द

भारतीय तन्त्र परम्परानुसार मध्य में स्थित नाड़ी और अन्य दोनों नाड़ियाँ जो दोनों ओर से आर पार जा रही हैं मजक प्रणालिका और संभवतः संवेदना नाड़ी जाल के

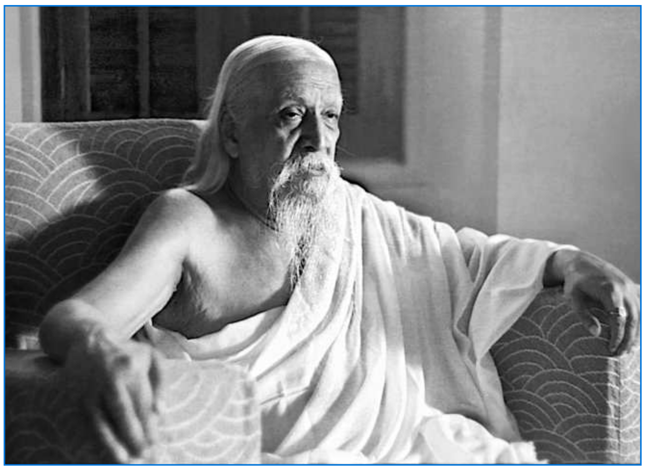

समरूप हैं। वे ऊर्ध्वगामी पराशक्ति (कुण्डलिनी) का अभिसरण-मार्ग चित्रित करती हैं। जब वह निम्न केन्द्र में जग कर शिखार पर अधिचेतन में प्रस्फुटित होने के लिए एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र में 'सर्पवत्' आरोहण करती हैं, मालूम होता है कि मिस्र के फाराओं के मुकुट पर सूर्यमण्डल से युक्त फन उठाये जो नाग देखा जाता है उसका और मेक्सिको के उड़ाऊ सांप का भी (और शायद बुद्ध के सिर पर छाया किया हुए नागों का, इत्यादि) यही अर्थ होगा। इन केन्द्रों के लक्षणों का केवल द्रष्टा के लिए ही महत्त्व है। उस विवरण के जिन भागों का हम सब के लिए मूल्य है उनके विषय में हम आगे चलकर बताएँगें। सर जीन बुडरौफ के अनूठे ग्रन्थ (आर्थर आवालो) 'दि सर्पेण्ट पावर' (गणेश एण्ड कंपनी, मद्रास) में इस विषय का सविस्तार अध्ययन मिलता है।

१) अतिचेतन, जिसमें शीर्षाग्र से कुछ ऊपर एक केन्द्र है जो हमारे विचारशील मानस को शासित करता है और विभासित, आत्मस्फूर्त, अधिमानसिक, इत्यादि मन के उच्चतर लोकों के साथ हमारा संपर्क स्थापित करता है

www.the-comforter.org

। २) मानस, जिसमें दो केन्द्र हैं : एक भौंहों के बीच जो विचार के द्वारा कार्य करने की आवश्यकता होने पर हमारे समस्त मानसिक व्यापारों की संकल्पशक्ति और क्रियाशक्ति को शासित करता है यही सूक्ष्मदृष्टि का केन्द्र अथवा तृतीय नेत्र भी है जिसका वर्णन कुछ परंपरागत सिद्धान्त करते हैं, दूसरा कण्ठ के स्तर पर जो मानसिक अभिव्यक्ति के तमाम रूपों को शासित करता है । ३)प्राण, जिसके तीन केन्द्र हैं- पहला हृदय स्तर पर जो हमारी भावात्मक सत्ता (प्रेम, घृणा इत्यादि)को चलाता है, दूसरा नाभि स्तर पर जो शासन, अधिकार, विजय की हमारी प्रवृत्तियों, हमारी महत्त्वाकांक्षाओं आदि को संचालित करता है, और तीसरा, नाभि और योनि के मध्यवर्ती निम्न प्राण जो अन्त्रयुजीय स्नायुजाल के स्तर पर है और निम्नतम स्पन्दनों पर अधिकार रखता है - जैसे ईर्ष्या, असूया, कामना, लोभ, क्रोध इत्यादि । ४) देह और अवचेतन जिनका केन्द्र मेरुदण्ड की जड़ में है और जो हमारी भौतिक सत्ता और काम पर अधिकार रखता है। यही केन्द्र हमें और भी नीचे अवचेतन के लोकों की तरफ भी उद्घाटित करता है।

सामान्यतः 'साधारण' मनुष्य में ये केन्द्र या तो प्रसुप्त रहते हैं या बन्द, अथवा केवल उसके तुच्छ जीवन के लिए आवश्यक स्वल्प प्रवाह को ही गुजरने देते हैं। यथार्थ में यह मनुष्य अपने आपे की चहारदीवारी में ही बन्द रहता है और एक बहुत छोटे दायरे में बाहरी दुनिया के साथ परोक्ष रूप से संबंध रखता है। वास्तव में अन्य मनुष्यों अथवा वस्तुओं को वह नहीं देखता, वह तो अपने आपको दूसरे लोगों में, अपने आपको द्रव्यों में और सर्वत्र अपने

www.the-comforter.org

आपको ही देखता है। अपने से बाहर वह नहीं निकलता । योग द्वारा ये केन्द्र खुल जाते हैं।

इस केन्द्र के खुलने पर जिस उज्जवल समृद्धि की प्रत्यक्षानुभूति होती है उसे प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त

करने के लिए यह 'सहस्रदल' कहलाता है और भारतीय परम्परा के अनुसार उसका स्थान सिर के शिखर पर है। श्री अरविन्द के अनुसार और अन्य अनेकों के अनुभवानुसार, सिर के शिखर पर जो अनुभव होता है, वह केन्द्र नहीं बल्कि सिर से ऊपर स्थित एक सौर्य स्रोत का भास्वर प्रतिबिम्ब है।

नीचे से ऊपर की ओर अथवा ऊपर से नीचे की ओर यह इस पर निर्भर करता है कि साधक परम्परागत योगविधियों और आध्यात्मिक मार्गों का अनुसरण करता है अथवा श्री अरविन्द के योग का अनुयायी है। हम पहले बता चुके हैं कि ध्यान और योगासनों का निरन्तर अभ्यास करते करते साधक एक दिन ऊर्ध्वारोहिणी पराशक्ति का अनुभव कर सकेगा जो मेरुदण्ड की जड़ में जागृत होती है और ठीक नागिन की तरह लहराती हुई एक स्तर से दूसरे पर चढ़ती हुई सिर के ऊपर तक जाती है। प्रत्येक स्तर पर यह पराशक्ति उससे सम्बद्ध केन्द्र को बेध देती है (उसकी प्रक्रिया काफी उग्र है)। वह केन्द्र खुल जाता है और साथ ही हमें विश्व की उन सारी स्पन्दनों या शक्तियों की ओर

www.the-comforter.org

खोल देता है जो उस केन्द्र विशेष की निर्धारित आवृत्ति के साथ समताल हैं। श्री अरविन्द के योग में नीचे उतरती हुई पराशक्ति उन्हीं केन्द्रों को ऊपर से नीचे की ओर बहुत धीरे-धीरे, कोमलता से खोलती है। यहाँ तक कि प्रायः निचले केन्द्र बहुत देर बाद ही पूरी तरह खुलते हैं । इस विधि की उपयोगिता मालूम हो जाती है जब हम यह समझ जायें कि प्रत्येक केन्द्र चेतना अथवा शक्ति की एक विश्वव्यापी विधि के अनुरूप है। यदि पग धरते ही हम प्राण और अवचेतन के निम्न केन्द्रों को खोल लें तो अपनी व्यक्तिगत छोटी-छोटी समस्याओं में नहीं बल्कि विश्व- कीचड़ के प्रचण्ड प्रवाह में हमारे डूब जाने का डर है- संसार के हंगामे और गंदगी के साथ स्वतः हमारा संबंध जुड़ जायेगा। और यही कारण है कि परम्परागत योगपद्धतियों में संरक्षक गुरु की उपस्थिति एकदम अनिवार्य है। पराशक्ति के अवरोहण द्वारा हम इस संकट से बच जाते हैं और अपनी सत्ता को अधिमानसिक ऊर्ध्वप्रकाश में सुदृढ़ रूप से प्रतिष्ठित करने के बाद ही निम्न केन्द्रों से हमारा आमना- सामना होता है।अपने इन केन्द्रों पर एक बार कब्जा जमा और साधक तभी से लोगों और चीजों को, दुनिया और अपने आपको उनके असली रूप में, जैसे कि वे हैं, उन्हें पहचानने लग जाता है क्योंकि अब वह केवल बाह्य चिह्न नहीं पकड़ता, संदिग्ध शब्दमात्र एवं संकेत भी नहीं, न कैदी का नाटक, और न ही वस्तुओं का रहस्यपूर्ण स्वरूप, बल्कि वह विशुद्ध स्पन्दन को पकड़ता है जो प्रत्येक स्तर पर, प्रत्येक वस्तु में, प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान है और जिसको छिपाना असंभव है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सिद्ध–योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

यह तो स्पष्ट ही है कि इन्द्रियातीत अनुभव अन्तर में ही संभव है। संसार के लिए अदृश्य गुरु की कृपा भी संसार की नजरों से ओझल, गुप्त है एवं सूक्ष्म स्तरों पर सम्पादित होती है। लल ने संसार के दृष्टि-पथ से दूर रह कर, कन्दराओं तथा जंगलों में, गुरु कृपा का खूब आनन्द लूटा।

यह लल का व्यक्तिगत विषय था जिसकी भनक कभी भी उसने बाहर नहीं लगने दी। गुरु के लिए तड़प-भटकन का भाव भी अन्तर में सहेजे रही तथा जब उस पर कृपा दृष्टि होती थी तो उसका प्रभाव, परिणाम तथा आनन्द भी अन्दर ही अन्दर सहन करती थी। लल पर अन्तर्गुरु की कृपा का रंग काफी गहरा था। वह उसके रंग में पूरी तरह रंग चुकी थी। उसीकी मस्ती में मस्त बनी रहती। उसके आन्तरिक संशय तथा भ्रम, एक-एक कर निवृत्त होते जा रहे थे। अन्तर के सभी आवरण उतरते जा रहे थे। न उसके पास संसार को दिखाने के लिए कुछ था, न ही उसके लिए संसार में कुछ देखने जैसा था। उसका वैराग्य परिपक्व अवस्था में विकासमान था। उसका प्रेम भी आन्तरिक था, प्रियतम भी अन्तर में था। उसका शरीर संसार में अवश्य था, किन्तु संसार उसके

www.the-comforter.org

अन्तर में नहीं था।

लल ने एक बार कहा था, ष्भक्त एवं संन्यासी भगवान को खोजने-प्राप्त करने के लिए मंदिर-मंदिर भटकते फिरते हैं किन्तु ईश्वरका वास तो उनके अपने अन्तर में है। मनुष्य देह सर्वोत्तम मंदिर है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लल को यदि अन्तिम तत्त्व का लाभ नहीं भी हुआ हो, किन्तु अन्तिम तत्त्व की ओर जाने वाला मार्ग निश्चित तथा प्रत्यक्ष रूप से प्रकट था।

सारा संसार एक जैसा नहीं। सब का अपना-अपना, स्वतंत्र तथा प्रायः परस्पर भिन्न मत है। एक ओर जहां अनेकों लोग लल का महात्मा के रूप में आदर करते थे, वहीं इसके विपरीत उसको पागल समझकर, उसे छेड़ने, उस पर फबतियाँ कसने, उसके नाम रखने, उस पर तरह-तरह के लांछन लगाने तथा उसे भला-बुरा कहने वालों की भी कमी नहीं थी। यही तो जगत के विविध रंग हैं। किन्तु लल को इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता था। वह आदर पाकर अभिमान से फूल नहीं जाती थी तथा न ही भला-बुरा कहने वालों का बुरा मानती थी। उसके लिए मान-अपमान तथा यश-अपयश एक समान थे।

संतों का यही तो लक्षण है कि उनका मन सदैव संतुलित बना रहता है। जब यह बात प्रकट तथा निश्चित हो जाती है कि यह जगत माया का केवल खेल तथा विस्तार है, इसमें सार-तत्त्व कुछ नहीं तो इसके घटना- क्रम का चित्त पर कोई भी प्रभाव ग्रहण करने का कोई अर्थ नहीं रहता। अज्ञानी-जन ही इसके घटनाक्रम के प्रभाव से सुखी-दुखी होते हैं। जगत के दृश्य एवं घटनाएं समुद्र में उठती लहरों-तरंगों के समान हैं जो संसार रूपी पटल पर उठती तथा विलीन होती रहती हैं।

www.the-comforter.org

किसी की प्रशंसा का कोई महत्त्व है तथा न निन्दा या अपशब्दों का कोई मूल्य। वह तो हम महत्त्व देकर उसे महत्त्वपूर्ण बना देते हैं। जिसने अपना चित्त ऐसा बना लिया है कि मान-अपमान या निन्दा-प्रशंसा का कोई महत्त्व नहीं, वही संत है। उसके लिए प्रिय-अप्रिय, शुभ-अशुभ, अनुकूल-प्रतिकूल अथवा भला-बुरा सब माया की कलाबाजियाँ हैं। रूपता-कुरूपता अथवा शुभ-अशुभ सब मन की कल्पनाएं अथवा धारणाएं हैं। मायापति इन सब द्वन्द्वों से अतीत है। संत वही है जिसने द्वन्द्वातीत अवस्था प्राप्त कर ली है।

लल ने एक बार कहा था, कोई मुझे गाली देता है अथवा पुष्प अर्पण कर मेरी पूजा करता है इसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होता। यही है संत-स्थिति तथा यही है परमार्थ पथ। किन्तु यह अवस्था प्राप्त करना बड़ा कठिन है, अभिमान् आड़े आ जाता है। प्रवचनकार चिल्ला-चिल्ला कर तथा समझा-समझा कर थक गए किन्तु न उन्होंने स्वयं निज अभिमान का त्याग किया तथा न ही श्रोताओं में से किसी पर कोई प्रभाव पड़ा। फिर मान- अपमान, तेरा-मेरा, अपना-पराया एक समान समझने का प्रश्न ही कहाँ उठता है। जैसा कि संतों के साथ प्रायः होता है कि उनके साथ अनेकों चमत्कार जोड़ दिए जाते हैं। ऐसा भावना के आवेश में किया जाता है। कालान्तर में भावुक जन उन चमत्कारों तथा सिद्धियों को मान्य कर लेते हैं तथा उन्हें प्रचारित भी करते रहते हैं। तथाकथित अन्य अलौकिक घटनाएं एवं दृष्टान्त भी साथ जुड़ते चले जाते हैं। संत का चरित्र कुछ का कुछ रूप ग्रहण कर,

www.the-comforter.org

सर्व-सामान्य के समक्ष उपस्थित होता रहता है।

लल के साथ भी ऐसा ही हुआ। लल के जीवन में काफी चमत्कार थे किन्तु वास्तविकता से कहीं अधिक बताकर परोस दिए जाते रहे हैं। हमें इन चमत्कारों में कोई संदेह नहीं है। किन्तु इनके नाम पर जो ठगबाजी चलती है तथा अनधिकारी व्यक्ति भी अपने आपको शक्ति एवं सिद्धि-संपन्न योगी प्रचारित करने लगते हैं, इससे हमें उस को मानने में संकोच होता है।

क्रमशः अगले अंक में...

अवतरण दिवस (24 नवम्बर 2014) के शुभ अवसर पर साधकों के साथ गुरुदेव।

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

"आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।"

जड़तत्त्व को ऊर्जातत्त्व में परिणत करने के लिए विज्ञान को केवल अत्युग्र तापमान उत्पन्न करने की भौतिक प्रणालियाँ ही विदित हैं; किन्तु यदि हम मूलभूत अग्नि को जानते हों, जो कि ऊर्जातत्त्व अथवा चित्-शक्ति का निम्न आधार है तो सिद्धांत रूप में हम जड़तत्त्व का संचालन कर सकते हैं, और अपनी देह को एक मानुषिक मशाल की अवस्था तक घटाये बिना वही रूपांतरण हमारे लिए संभव हो जाता है।

इस प्रकार सन् 1926 की इस बातचीत से दो भौतिक तथ्य (और उनके आधारभूत आध्यात्मिक तथ्य) हमारे सामने आते हैं, जो रूपांतर की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व रखते हैं। एक तो यह कि सभी पार्थिव रूप रचनाएँ, चाहे वे किसी भी प्रकार की क्यों न हों, उन्हीं समान संघटकों से निर्मित हैं, और उनके गुणधर्मभेद

www.the-comforter.org

का एकमात्र कारण है अणुविन्यास की विभिन्नता। जगत् की दिव्य एकता के आध्यात्मिक सत्य का यह भौतिक प्रतिरूप है; संसार एक ही तत्त्व से, एक दिव्य तत्त्व से बना है – 'तू ही पुरुष और स्त्री है, तू बालक और बालिका है। जराजर्जर तू लाठी के सहारे चलता है। नील और हरित विहग तू है, और यह लोहित वर्ण के नेत्रों वाला पक्षी भी तू ही है' (श्वेताश्वर उपनिषद्-4.3.4)। तत्त्व की इस एकता के बिना रूपांतर संभव ही न होता, क्योंकि हर बार एक नये तत्त्व को बदलना पड़ता। दूसरी ओर जड़तत्त्व में अंतर्निहित, यह सौर अग्नि भौतिक प्रतिरूप है इस मूलभूत अग्नि का, जो कि-श्री अरविन्द ने इसी संभाषण में यह स्पष्ट कर दिया है – रूपाकृतियों की सृष्टि करती है।अग्नि का संचालन करने का अर्थ है आकृतियों में परिवर्तन करने की, जड़तत्त्व के रूपांतर की क्षमता – 'वह नर इस आनंद का रस नहीं ले सकता जो अभी अपक्व है और जिसकी देह अग्नि के तेज में तपायी नहीं गयी। वे ही इस आनंद को सहन करने की, इसका उपभोग करने की क्षमता रखते हैं, जिन्हें अग्निशिखा ने निष्पन्न कर दिया है', ऐसा ऋग्वेद में कहा है (९. ८३.१)। हमारी देह में विद्यमान अपने भौतिक प्रतिरूप, न्यैष्टिक रज का तत्त्वांतरण यह तप्त सुवर्ण रज ही करेगी। श्री अरविन्द ने लिखा है, स्थूल प्रक्रिया की अपेक्षा सूक्ष्म प्रक्रिया कहीं अधिक बलवती होगी। फलतः वह कार्य, जिसके लिए अभी एक भौतिक परिवर्तन, यथा तापमान में वृद्धि की आवश्यकता पड़े, अग्नि की सूक्ष्म क्रिया द्वारा संपन्न होना संभव होगा। ये जो हमारे अणु हैं, ये भी सनातन अनुष्ठान पद्धति का एक

www.the-comforter.org

सुकर यंत्र ही हैं - कहीं कुछ अचल-अटल नहीं हो गया है, कुछ भी अनिवार्य नहीं है। संयोजन कितनी तरह से होना संभव है, इसकी कोई सीमा नहीं है ; अजर-अमर नव मानव का कहीं अंत नहीं है।

द्वितीय चरण (देह)

द्वितीय काल सन् 1926 में आरंभ होकर सन् 1940 तक चला । यह देह और अवचेतन के अंदर वैयक्तिक कार्य का समय था। यहाँ हमें स्वयं चेतना के निमानसिक रूपांतर तक चले जाने के लिए सब संकेत प्राप्त हैं, कहीं तार नहीं और हमें रूपातर का ये मूल सिद्धांत क्या है यह भी विदित है। ऋग्वेद में अग्नि ही है 'जो कार्य को करती है' (४.१.१४)। परन्तु यह अभी नहीं कहा जा सकता कि जड़तत्त्व में परिवर्तन लाने के लिए यह अग्नि किस प्रकार कार्य करेगी। इसका अभी पर्याप्त ज्ञान हमें प्राप्त नहीं है। श्री माँ कहती हैं कि यदि प्रक्रिया हमें ज्ञात होती तो वह कभी का हो चुका होता।अन्य सब सिद्धियों का भारतीय परंपरा बडी बारीकी से, ब्यौरेवार इतना सही विवरण देती है कि आश्चर्य हो आता है। निर्वाण की सिद्धि, विश्वव्यापी परम आत्मन् की उपलब्धि और जीवात्मन् के साक्षात्कार की, गुरुत्व, क्षुधा, शीत, निद्रा, व्याधि पर प्रभुत्व प्राप्त करने, स्वेच्छा या निज देह से बाहर निकलने और जीवन चिरकाल तक बनाये रखने की सब प्रक्रियाएँ ज्ञात हैं - कोई भी वहाँ तक जा सकता है; मार्ग जाने-बूझे हैं, सहस्रों वर्ष हुए ऋषियों-महर्षियों ने, हिन्दू शास्त्रों ने इनकी सब अवस्थाएँ खोल-खोल कर समझा दी थीं। रह गया प्रश्न तप-संयम का, अध्यवसाय का - और सही समय का।

किन्तु रूपांतर, यह कभी किसी ने

www.the-comforter.org

नहीं किया। रास्ते का एकदम पता नहीं है, मानो हम ऐसे प्रदेश के अंदर बढ़ रहे हों जो अभी अस्तित्व ही नहीं रखता। शायद ऐसा ही कुछ तब भी हुआ होगा जब जड़तत्त्व और जीवनतत्त्व के जगत् में मानस के प्रथम रूपों का आविर्भाव आरंभ हुआ था। एक अर्ध-पाशव जीव, जिसके अंदर पहलेपहल मानसिक स्पंदों ने प्रवेश किया, इस अपूर्व व्यापार को कैसे समझ पाता? इसका वर्णन करना, विशेषतया यह बताना कि विचार-शक्ति का प्रयोग करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है, उसके लिए कहाँ संभव था? श्री माँ के ही शब्द हम फिर से उद्धृत करते हैं; हमें पता नहीं कि अमुक अनुभूति इस मार्ग का भाग है या नहीं, यह तक नहीं मालूम कि हमने प्रगति की है या नहीं, क्योंकि यदि हमें यह पता चल जाये कि हम आगे बढ़े हैं तो इसका अभिप्राय हो कि हम रास्ता जानते हैं - रास्ता है ही नहीं, वहाँ कभी कोई नहीं गया! वस्तुतः जब वह हो जायेगा तभी यह बताना संभव होगा कि वह क्या है। श्री अरविन्द के शब्दों में वह अज्ञात के अंदर एक साहसिक उत्क्रमण है। इस नवीन सृष्टि के आगे हमारी दशा कुछ-कुछ आदिकालीन नरवानर की सी है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

भारत के उत्थान में योग शक्ति का अद्‌भुत प्रभाव और राजनीति का गौण रूप

वर्तमान में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग साधना में शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से मनुष्य मात्र में बड़ा ही अद्‌भुत परिवर्तन आ रहा है। एक साधक अपने गृहस्थ धर्म का पूर्णतः पालन करते हुए किस प्रकार उत्तम, स्वस्थ और आनंदमय जीवन जी सकता है, ऐसा श्री अरविन्द ने अपने भाई बारीन को पत्र के माध्यम से समझाया था। वर्तमान में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग में मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन सम्मिलित है।

"अप्रैल, 1920-(श्री अरविन्द के भाई, बारीन घोष को अलीपुर बम के मामले में मौत की सजा हो गई थी। अपील करने पर यह सजा घटाकर आजीवन अंडमान द्वीपसमूह को निर्वासन कर दी गई थी; क्षमादान के पश्चात् वे 1920 के शुरू में रिहा कर दिये गये थे। इसके शीघ्र बाद ही बारीन ने श्री अरविन्द को राजनैतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोणों से मार्गदर्शन के लिए लिखा। श्री अरविन्द द्वारा बंगाली में लिखे गये लंबे उत्तर से कुछ उद्धरण।)

ईश्वर, मनुष्य से जो चाहता है वह है-उसे यहाँ व्यक्ति में और सामूहिकता में साकार करना-ईश्वर को जीवन में प्राप्त करना। योग की प्राचीन व्यवस्था आत्मा और जीवन को समन्वित नहीं कर पाई, न जोड़ पाई; उसने संसार को माया अथवा ईश्वर की क्षणिक क्रीड़ा मानकर रद्द कर दिया।

www.the-comforter.org

परिणाम जीवनशक्ति का ह्रास और भारत का अधःपतन हुआ। गीता कहती है, 'उत्सीदेयुरि मे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्' (यदि मैं कर्म न करूँ तो ये लोग विकीर्ण होकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ', ३.२४) सचमुच भारत के 'ये लोग बरबाद हो गये हैं। यदि कुछ संन्यासियों, बैरागियों और साधुओं ने आत्मबोध अथवा मोक्ष प्राप्त कर लिया, यदि

कुछ भक्त प्रेम के आवेश में, ईश्वर के नशे में और आनंद में नाचने लगें और सारी की सारी जाति जीवन से वंचित होकर, बुद्धि से वंचित होकर घोर तमस् की गहराइयों में डूबी रहे तो यह किस तरह की आध्यात्मिक पूर्णता हुई?

मैंने राजनीति क्यों छोड़ी? क्योंकि हमारी राजनीति असली भारतीय वस्तु नहीं है; वह यूरोप से आयातित है, यूरोपीय तौर-तरीकों की एक नकल मात्र। पर उसकी भी जरूरत थी। हम दोनों भी यूरोपीय शैली की राजनीति में लगे थे; यदि हमने ऐसा न किया होता तो देश ऊपर न उठा होता, और हमें भी अनुभव न मिला होता अथवा पूरा विकास प्राप्त न हुआ होता।...

पर अब समय आ गया है जब हमें परछाई को बढ़ाने की बजाय पदार्थ को पकड़ना चाहिए। हमें भारत की वास्तविक आत्मा को जाग्रत करना चाहिए और उसी की प्रतिकृति में सारे कार्यों को ढालना चाहिए। पिछले दस वर्षों से मैं इस यूरोपीय राजनैतिक पात्र में अपना प्रभाव चुपचाप डालता रहा हूँ, और थोड़ा बहुत परिणाम भी हुआ। जब जरूरत पड़े, तब मैं इसे करते भी रह सकता हूँ। किंतु यदि मैं बाहर आकर इस काम को फिर से करने लगूँ, अपने को राजनैतिक नेताओं से मिलाकर उनके साथ काम करने लगूँ तो यह जीवन के एक विदेशी नियम का समर्थन होगा और एक मिथ्या राजनैतिक जीवन होगा। लोग अब राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते हैं – जैसे उदाहरण के लिए गांधी – पर उन्हें सही तरीका नहीं मिलता। गांधी क्या कर रहे हैं? 'अहिंसा परमो धर्मः' (अहिंसा सर्वोत्कृष्ट नियम है), जैन धर्म, हड़ताल, सविनय अवज्ञा आदि को मिलाकर एक खिचड़ी बना दी जिसका नाम 'सत्याग्रह' रख दिया; देश में एक प्रकार के भारतीयकरण किये हुए

www.the-comforter.org

टॉल्स्टॉयवाद को लाना हुआ। परिणाम होगा–यदि कोई स्थायी परिणाम हुआ तो–एक प्रकार की भारतीयकृत बोल्शेविक विचारधारा। मुझे उनके काम में कोई आपत्ति नहीं है। प्रत्येक को अपनी प्रेरणा के अनुसार काम करने दो। पर यह वास्तविक वस्तु नहीं है।

मेरा यह विश्वास है कि भारत की कमजोरी का प्रमुख कारण उसकी दासता नहीं है, न गरीबी और न आध्यात्मिकता अथवा धर्म की हीनता, बल्कि वह है- विचार–शक्ति का ह्रास, ज्ञान की मातृभूमि में अज्ञान का विस्तार।सर्वत्र में विचार करने की अयोग्यता अथवा अनिच्छा–विचार की असमर्थता या विचार–भीति देखता हूँ।मध्य युग में जो भी रहा हो, इस समय यह प्रवृत्ति महान अवनति का लक्षण है। मध्य युग तो एक रात थी, अज्ञानी आदमी की विजय का समय; आधुनिक विश्व ज्ञान के आदमी की विजय का समय है।

जो भी अधिक विचार करके, अधिक खोज करके, अधिक श्रम करके, विश्व के सत्य को अधिक थाह और सीख सकेगा वही अधिक शक्ति प्राप्त करेगा। यूरोप की ओर देखो तो तुम्हें दो चीजें दिखाई देंगी; विचार का एक व्यापक असीम सागर और एक विशाल और तीव्र, पर अनुशासित बल की क्रीड़ा।यूरोप की सारी शक्ति वहीं निहित है।

www.the-comforter.org

इसी शक्ति के बल पर वह विश्व को निगल सका, हमारे पुरातन तपस्वियों की तरह, जिनकी शक्ति से ब्रह्मांड के देवता भी भयभीत रहते थे, दुविधा में बने रहते और अधीनता स्वीकार करते थे। लोग कहते हैं कि यूरोप विनाश के जबड़ों में तेजी से घुसा जा रहा है।मैं ऐसा नहीं समझता। ये सारी क्रांतियाँ, ये सारी उखाड़–पछाड़ नये सृजन की प्राथमिक अवस्थाएँ हैं।

अब भारत को देखो; कुछ एकाकी

दिग्गजों को छोड़कर, सर्वत्र तुम्हारा 'सीधा आदमी' है, वह तुम्हारा औसत आदमी जो न सोचेगा और न सोच सकता है, जिसमें जरा-सी भी शक्ति नहीं है, बस एक क्षणिक उत्तेजना है।... अंतर यहाँ पर है। पर यूरोप की शक्ति और विचार की एक विघातक सीमा है। जब वह आध्यात्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उसकी विचार-शक्ति काम करना बंद कर देती है। वहाँ यूरोप को सब कुछ एक पहेली, धुंधली तत्त्व-मीमांसा, यौगिक विभ्रम जैसा दिखाई देता है।- 'वह अपनी आँखें मलता है, जैसे कि धुएँ में, पर कुछ भी साफ-साफ नहीं देख पाता। तो भी अब यूरोप में इस सीमा को भी लाँघने का महान् प्रयास हो रहा है। "हम अपने पूर्वजों को धन्यवाद दें कि हमारे पास आध्यात्मिक समझ है।"

और जिसमें भी यह समझ है, उसकी पहुँच के भीतर ऐसा ज्ञान है, ऐसी शक्ति है कि एक ही फूँक में वह यूरोप की सारी महान् शक्ति को तिनके की तरह उड़ा सकता है। किंतु उस शक्ति को पाने के लिए भी शक्ति चाहिए। पर हम तो शक्ति के पुजारी ही नहीं हैं; हम तो सुगमता के पूजक हैं।... हमारी सभ्यता, अस्थि पंजर बन गई है, हमारा धर्म बाह्य बातों का मताग्रह, हमारी आध्यात्मिकता प्रकाश की एक फीकी टिमटिमाहट अथवा नशे की एक क्षणिक तरंग। जब तक ऐसी परिस्थिति बनी रहती है तब तक भारत का कोई स्थायी पुनरुत्थान असंभव है।

हमने शक्ति की साधना छोड़ दी है और इसलिए शक्ति ने हमें छोड़ दिया। हम प्रेम के योग का अभ्यास करते हैं, पर जहाँ ज्ञान या शक्ति नहीं है, वहाँ प्रेम टिकता नहीं है, संकीर्णता और क्षुद्रता आ जाती है। संकीर्ण और लघु मानस, जीवन और हृदय में प्रेम को कोई स्थान नहीं मिलता। बंगाल में प्रेम कहाँ है? इस विभाजन से भरे भारत में भी और कहीं इतना झगड़ा, तनावपूर्ण

www.the-comforter.org

संबंध, ईर्ष्या, घृणा और गुटबंदी नहीं है जितनी बंगाल में। आर्य लोगों के भव्य वीरत्व के युग में इतनी चीख-चिल्लाहट और अंगविक्षेपण नहीं था, पर जिस प्रयास को उन्होंने गति दी, वह अनेक सदियों तक चला। बंगाली का प्रयास एक या दो ही दिन चलता है। तुम कहते हो कि जो आवश्यक है वह भावनात्मक उत्तेजना है, देश को उत्साह से भर देना है।

हमने स्वदेशी अवधि में राजनैतिक क्षेत्र में वह सब कुछ किया था; पर जो कुछ हमने किया था, वह सब अब धूल में पड़ा है।... इसलिए अब मैं भावनात्मक उत्तेजना, संवेदना और मानसिक उत्साह को आधार नहीं बनाना चाहता।

एक व्यापक और वीरतापूर्ण समानता को मैं अपने योग की नींव बनाना चाहता हूँ; जीव की सभी क्रियाओं में, उस समानता पर आधारित आधार की क्रियाओं में, मैं संपूर्ण, दृढ़ और अडिग शक्ति चाहता हूँ; शक्ति के उस महासागर के ऊपर मैं चाहता हूँ कि ज्ञान का सूर्य अपनी व्यापक किरणें बिखेरे और उस देदीप्यमान व्यापकता में अनंत प्रेम, आनंद और एकत्व का हर्षोन्माद स्थापित हो।

मुझे दसियों हजार चेले नहीं चाहिए; यदि मुझे ईश्वर के उपकरणों के रूप में क्षुद्र अहंकार से मुक्त सौ संपूर्ण व्यक्ति भी मिल जाएँ तो बहुत हैं। मुझे गुरु के प्रचलित व्यापार में विश्वास नहीं है। (जो वर्तमान में धर्म और गुरु के नाम पर व्यापार चल रहा है) मैं गुरु बनना भी नहीं चाहता। मैं जो चाहता हूँ वह यह कि कुछ लोग मेरे अथवा किसी और के स्पर्श से ''जाग्रत'' हो जाएँ और भीतर से अपने सोये हुए ''देवत्व'' को प्रकट करें तथा ''दिव्य जीवन'' प्राप्त करें। ऐसे ही लोग इस देश को ऊपर उठायेंगे।

–महर्षि श्री अरविन्द

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

24 SAT AUGUST 1996

feed

भारत का भाग्योदय होने वाला है।

आज सम्पूर्ण विश्व में जो मृत्यु का ताण्डव हो रहा है, उससे मानव-जाति थर-थर कांप रही है। अमेरिकनों ने अपने भगवान (यीशु) को पेन्टागन में उसकी सुरक्षा के लिए, जबरदस्ती ठूंस दिया है।

भारत अपने राम की रक्षा के लिए अयोध्या में ऐसा मंदिर बनवाने की तैयारी कर रहा है, जिसमें राम सुरक्षित रह सके। सभी धर्मों में अन्धाधुन्ध चल रहा है। कोई धर्म मानव शान्ति का उपाय नहीं ढूंढ पा रहा है।

कलियुग का गुणधर्म है कि इस युग में सच्चे मन से ईश्वर को याद कर ले तो तत्काल शान्ति प्राप्त होती है। तामसिक वृत्तियों के प्रभाव के कारण आज सम्पूर्ण मानव जाति मृत्यु भय से थर-थर कांप रही है। मनुष्य को जब मौत दिखाई देती है, तभी वह प्रभु से करुण पुकार करता है।

विश्व के लोग इस विनाश लीला का क्या अन्त होगा, अभी समझ नहीं पा रहे हैं। भौतिकवाद की चकाचौंध ने और उसकी विनाश लीला ने पूरे विश्व को हिला कर रख दिया है। आज सभी धर्मों के लोग प्रभु से प्रार्थना कर रहे विश्व की रक्षा करो।

मैं इस संकट का हल निकट ही देख रहा हूँ। मैं श्री अरविन्द के निम्न विचार से पूर्णरूप से सहमत हूँ :—

"I am seeking to bring ~~them~~ some principle of inner truth light, harmony peace into the earth-consciousness ~~from above and I am seeking to make it possi~~ I see it above and know what it is — I feel it ever gleaming down on my consciousness from above and I am seeking to make it possible for it to take up the whole being into its own native power, instead of the nature of man continuing to remain in half-light, half-darkness. I believe the "decent" of this truth opening the way to a development of divine consciousness here to be "the final sense of the earth evolution."

सम्पूर्ण विश्व में अभी तक की मान्यताओं के अनुसार मुक्ति के लिए ऊर्ध्व गमन करना पड़ता था। इस युग में वह परमतत्व अधोगमन (Descent) कर के पार्थिव चेतना में हमेशा-हमेशा के लिए लय हो गया।

25 SUNDAY

ईसाई जगत स्वर्ग की कल्पना बाइबल के अनुसार करते हैं, क्योंकि उन्होंने यीशु को स्वर्ग भेज दिया था। उन्हें अभी तक पता नहीं वह पुनः अधोगमन कर के पार्थिव चेतना में पुनः शरीर धारण कर चुका है, अतः अब स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया है। यीशु आवाज देकर उन्हें कहेगा तभी ईसाइयों को समझ में आवेगा।

[signature] 13/5/2003 मुम्बई

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

मांग और कामना एक ही चीज के दो भिन्न-भिन्न रूप हैं-और यह भी जरूरी नहीं है कि हमारी कोई वृत्ति विक्षुब्ध और चंचल हुए बिना कामना नहीं कही जा सकती, बल्कि, इसके विपरीत, कामना शांत भाव से जमी हुई और स्थायी चीज हो सकती है अथवा नित्य बार-बार सामने आ सकती है।मांग या कामना मनोमय या प्राणमय स्तर से आती है, किंतु हृत्पुरुषोचित या आध्यात्मिक आवश्यकता एक दूसरी ही चीज है। हृत्पुरुष न तो कोई मांग करता है न कामना -वह करता है अभीप्साय वह अपने समर्पण के लिये कोई शर्त नहीं रखता अथवा उसकी अभीप्सा यदि तुरंत पूर्ण नहीं कर दी जाती तो वह अपने समर्पण को वापिस नहीं ले लेता-क्योंकि हृत्पुरुष को भगवान् अथवा गुरु के ऊपर पूर्ण विश्वास होता है और वह भगवत कृपा प्राप्त होने के मुहूर्त तक या उसके लिये उपयुक्त समय तक प्रतीक्षा कर सकता है। अवश्य ही हृत्पुरुष का अपना एक निजी आग्रह भी होता है, पर वह भगवान् के ऊपर कभी कोई दबाव नहीं डालता, बल्कि प्रकृति के ऊपर डालता है, वह प्रकृति के सभी दोषों को, जो हमारी सिद्धि के मार्ग में बाधक होते हैं, अपनी ज्योतिर्मयी अंगुली के द्वारा दिखा देता है, योग की अनुभूति या साधना की क्रिया में जो कुछ मिला हुआ होता है, अज्ञानमय या अपूर्ण होता है उसे वह छांटकर बाहर निकाल देता है और जबतक वह प्रकृति को पूर्णरूपेण भगवान् की ओर खोल नहीं देता, सब प्रकार के अहंकार से उसे मुक्तकर, समर्पित कर, उसके मूल भाव को और उसकी सारी क्रियाओं को सरल और सत्यमय नहीं बना देता तबतक वह अपने-आपसे अथवा प्रकृति से संतुष्ट नहीं होता।

www.the-comforter.org

इसी चीज को पहले मन, प्राण और शरीर की चेतना में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करना होगा और तब उसके बाद समस्त प्रकृति का अतिमानसिक रूपांतर संभव होगा। अन्यथा उससे पहले साधक को केवल मन, प्राण और शरीर के स्तर में थोड़ी या बहुत चमकीली, आधी उजेली, आधी अंधेरी ज्योतियां और अनुभूतियां ही प्राप्त होती हैं और उनकी प्रेरणा या तो किसी बृहत्तर मन या विशालतर प्राण से आती है अथवा अधिक-से- अधिक मानव-मन के ऊपर की उन मनोमय भूमिकाओं से आती है जो बुद्धि और अधिमानस के बीच में विद्यमान हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके

ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्ति पात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

www.the-comforter.org

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान्

परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है।यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है।इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी. बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में जो उपदेश दिया और उससे अर्जुन को जो ज्ञान मिला, वही सच्चा ज्ञान है। अर्जुन ने उपदेश के बाद जो कार्य किया, जो रास्ता अपनाया, वही सही मार्ग है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)
सेवा में,
श्रीमान्____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।